

SWAMI NIRANJANANANDA SARASWATI

Swami Niranjanananda Saraswati is a sannyasi disciple and spiritual successor of Sri Swami Satyananda Saraswati of Munger, disciple of Sri Swami Sivananda of Rishikesh. Born at Rajnandgaon, Chhattisgarh on February 14, 1960, Swami Niranjanananda was graced by his guru, Sri Swami Satyananda Saraswati. At the age of four he came to live with him at the Bihar School of Yoga in Munger and began his formal training in the yogic and spiritual sciences. In 1971 he was initiated into Dashnami Sannyasa, and in 1990 he was initiated as a paramahamsa sannyasi and in 1993 anointed spiritual preceptor in succession to Swami Satyananda Saraswati.

2. At the age of 23, Swami Niranjanananda was appointed President of Bihar School of Yoga in 1983 and he held the post until 2008. During his stewardship Bihar School of Yoga pioneered the application of yoga across all sectors of society. To address the needs of professionals, stress management and self-development courses were conducted. Swami Niranjanananda introduced yoga training programs for athletes, coaches and physical teachers including the Indian national archery and gymnastics team, wrestling, judo, boxing and volleyball teams as well as administrative officers of the Sports Authority of India (SAI). Specialized training programs were given for army instructors in high altitude and desert areas, and for the police. Yoga therapy training was provided by Bihar School of Yoga in all medical colleges in Bihar and also to the registered medical students and doctors. Research projects were undertaken investigating the effects of yoga on drug addiction, cancer and HIV. In 1994, under his guidance Bihar School of Yoga launched the "Valmiki" project and began teaching yoga in twenty-four prisons in Bihar. Yoga camps were conducted in remote villages of Bihar.

3. Swami Niranjanananda established Bihar Yoga Bharati, Institute of Advanced Studies in Yogic Sciences in 1994, which was recognised as a Deemed University by the Government of India in 2000. In the year 2000, he founded the Yoga Publications Trust in Munger, which has published over 150 titles in English, and over 50 Hindi publications on yoga, and spiritual life. In 1995, Swami Niranjanananda inspired and nurtured the Bal Yoga Mitra Mandal, a children's yoga movement, which is managed by children for children and now has over 150,000 bal yogis within India, and 5000 children trained as yoga teachers. In 2004, at the invitation of the Bal Yoga Mitra Mandal, the then President of India, Dr. Abdul Kalam came to Munger to address the children at their annual Bal Yoga Divas function and named Munger the "City of Yoga."

4. In 1994, Swami Niranjanananda was the guest speaker at an international conference organized by UNESCO on the application of yoga in education, titled 'Invent Tomorrow's Education'. In 2000, he gave the key note address to UNESCO, speaking on the Role of Yoga in Education. In 2006, he attended the Annual Conference of Association of Physicians of India as the Guest of Honour to deliver the inaugural address. In 2007, Swami Niranjanananda gave the key note address to the Young Presidents Organization during the Bangalore Chapter Event, and the World Presidents International University Event in Delhi.

5. Author of many English and Hindi publications on yoga, tantra, and the Upanishads, he has also contributed a chapter to "Traditional Medicine in Asia", published by the World Health Organisation (WHO). His extensive experiential and scriptural research has made a noteworthy contribution to the propagation of the yoga vidya, in particular the subject of dharana, by presenting a complete collection of yogic, tantric and upanishadic dharanas.

6. Swami Niranjanananda is acclaimed as source of wisdom on all aspects of yogic philosophy, practice and lifestyle. Following his Gurus mandate, in 2008 he relinquished all administrative and institutional duties, in order to undertake higher Vedic sadhanas according to the Paramahamsa parampara. He is an independent sannyasi engaged in reviving the yoga vidya and sannyasi lifestyle, to integrate the material and spiritual aspects of human life.



स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

स्वामी निरंजनानंद सरस्वती मुंगेर के स्वामी श्री सत्यानंद सरस्वती (ऋषिकेश के स्वामी श्री शिवानंद के शिष्य) के सन्यासी शिष्य एवं एक आध्यात्मिक उत्तरारधिकारी हैं। 14 फरवरी, 1960 को राजनंदगांव, छत्तीसगढ़ में जन्में स्वामी निरंजनानंद को अपने गुरू श्री स्वामी सत्यानंद सरस्वती की कृपा प्राप्त हुई। चार वर्ष की आयु में आप मुंगेर स्थित बिहार योग विद्यालय उनके सानिध्य में रहने के लिए आए और यौगिक एवं आध्यात्मिक विज्ञान में अपना औपचारिक प्रशिक्षण प्रारंभ किया। वर्ष 1971 में आपने दशनामी संन्यास में दीक्षाग्रहण की तथा 1990 में परमहंस संन्यासी के तौर पर आपने दीक्षा ग्रहण की तथा 1993 में स्वामी सत्यानंद सरस्वती के उत्तराधिकारी के रूप में आध्यात्मिक गुरू के तौर पर आपका अभिषेक हुआ।

2. 23 वर्ष की आयु में आपको 1983 में बिहार योग विद्यालय का अध्यक्ष नियुक्त किया गया और वर्ष 2008 तक आप इस पद पर बने रहे। आपके मार्गदर्शन में बिहार योग विद्यालय समाज के सभी क्षेत्रों में योगाभ्यास का अग्रणी बन गया। प्रोफेशनल लोगों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए, तनाव प्रबंधन तथा आत्म-विकास पाठ्यक्रमों की शुरूआत की गई। आपने भारतीय राष्ट्रीय तीरंदाजी एवं जिम्नास्टिक टीमों, कुश्ती, जूडों, बाक्सिंग एवं बालीबॉल टीमों सहित एथलीटों, कोचगण तथा फिजीकल टीचरों तथा साथ ही भारतीय खेल प्राधिकरण (एस.ए.आई.) के प्रशासनिक अधिकारियों के लिए योग प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं। आपने अत्यधिक ऊचाइयों के स्थानों तथा रेगिस्तानी क्षेत्रों के सेना इंस्ट्रक्टरों एवं पुलिस के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए है। बिहार योग विद्यालय द्वारा सभी मेडिकल कालेजों में तथा साथ ही पंजीकृत चिकित्सा विद्यार्थियों एवं चिकित्सकों को योग थेरेपी प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। नशे की लत, कैंसर और एचआईवी पर योग के प्रभाव की जांच करने हेतु अनुसंधान परियोजनाएं प्रारंभ की गई हैं। वर्ष 1994 में, आपके मार्गदर्शन में बिहार योग विद्यालय ने 'वाल्मिकी' परियोजना प्रारंभ की है और बिहार के 24 कारागारों में भी योग शिक्षण प्रारंभ किया है। बिहार के दूरस्थ गांवों में भी योग शिविरों के आयोजन किये गए।

3. आपने 1994 में बिहार योग भारती, इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन योगिक साइंस की स्थापना की जिसे वर्ष 2000 में भारत सरकार द्वारा एक मानद विश्वविद्यालय के तौर पर मान्यता प्रदान की गई। वर्ष 2000 में, आपने मुंगेर में योग प्रकाशन ट्रस्ट की स्थापना की जिसने योग एवं आध्यात्मिक जीवन पर अंग्रेजी में 150 से अधिक टाइटल तथा हिन्दी में 50 से अधिक प्रकाशनों को प्रकाशित किया है। 1995 में, आपने बाल योग मित्र मंडल जो बच्चों की एक योग क्रिया है, को प्रेरित एवं पोषित किया और जिसे बच्चों द्वारा एवं बच्चों के लिए चलाया जा रहा है तथा इसमें देशभर के 1,50,000 से अधिक बाल योगी मौजूद है तथा इसके योग गुरू के तौर पर 5,000 से अधिक बच्चों को प्रशिक्षण दिया है। वर्ष 2004 में बाल योग मित्र मंडल के आमंत्रण पर भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम वार्षिक बाल योग दिवस समारोह में बच्चों को संबोधित करने मुंगेर आए और उन्होंने मुंगेर को "योग नगर" का नाम दिया।

4. 1994 में यूनेस्को द्वारा "इन्वेंट टुमारोज एजुकेशन" नामक विषय पर शिक्षा में योग के उपयोग पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में अतिथि वक्ता के रूप में बुलाया गया। वर्ष 2000 में आपने शिक्षा में योग की भूमिका पर बोलते हुए यूनेस्को में एक महत्वपूर्ण समाधान प्रस्तुत किया। वर्ष 2006 में एक सम्मानित अतिथि के तौर पर आपने उद्घाटन भाषण देने के लिए भारतीय चिकित्सक संघ के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया। वर्ष 2007 में आपने बेंगलोर चैप्टर इवेंट तथा दिल्ली में वर्ल्ड प्रेजिडेंट इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी इवेंट के दौरान युवा अध्यक्ष संगठन के समक्ष एक महत्वपूर्ण की नोट (key-note) प्रस्तुत किया।

5. आप योग, तंत्र एवं उपनिषद पर विभिन्न हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रकाशनों के लेखक हैं तथा आपको विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू एच ओ) द्वारा प्रकाशित "एशिया में परंपरागत औषधियों" पर एक अध्याय लिखने का भी श्रेय प्राप्त है। आपके व्यापक अनुभवात्मक तथा आध्यात्मिक शोध ने विशेष रूप से "धारणा" के विषय पर यौगिक, तांत्रिक तथा उपनिषदीय संकल्पनाओं का संपूर्ण संग्रह प्रस्तुत करते हुए योग विद्या के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

6. यौगिक, दर्शन, अभ्यास एवं जीवन शैली के सभी पहलुओं पर ज्ञान के स्रोत के तौर पर आपकी प्रशंसा की जाती है। अपने गुरूजनों के आदेश का पालन करते हुए आपने 2008 में परमहंस परंपरा के अनुसार, उच्चतर वैदिक साधना प्रारंभ करने के उद्देश्य से सभी प्रशासनिक एवं सांस्थानिक दायित्व को त्याग दिया। आप मानव जीवन के भौतिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं को एकीकृत करने के लिए योग विद्या एवं संन्यासी जीवनशैली पुनर्जीवित करने में लगे हुए एक स्वतंत्र संन्यासी हैं।